अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

डिजिटल मीडिया के युग में हिंदी का बदलता स्वरूप और भविष्य के लिए संभावनाएँ

डॉ० पूजा झा
विद्यालय अध्यापक (11-12)
उ० मा० वि० बलुआचक, पुरैनी, भागलपुर, बिहार।

Abstract: प्रस्तुत शोध डिजिटल मीडिया में हिंदी के बदलते स्वरूप और संभावनाओं को उजागर करता है। आज जनसंचार माध्यमों; इंटरनेट, स्मार्टफोन, दूरदर्शन एवं विभिन्न अन्य सोशल मीडिया में हिंदी भाषा की नवीनतम शैली एवं प्रस्तुति दृष्टिगोचर होती है।हिंग्लिश के बढ़ते प्रभाव ने जहाँ हिंदी को एक नया बहुआयामी रूप प्रदान किया है,वहीं इसने आज की युवा पीढ़ी को भी लुभाने का का भी काम किया है।आज की युवा पीढ़ी भी सक्रियता के साथ इस सहज, सरल हिंदी के प्रति अपना प्रेम अभिव्यक्त कर कर पा रही है,लेकिन परंपरागत संस्कृतनिष्ठ हिंदी का हिंग्लिश में स्वरूप परिवर्तन भविष्य के प्रति एक चिंता भी उत्पन्न करती है।

शोध-पत्र में हिंदी के बदलते स्वरूप और हिंग्लिश के प्रसार के बढ़ते प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। किसी भी भाषा की संरचना व्याकरणिक शुद्धता पर निर्भर होती है और लिखित रूप में वहीं सर्वमान्य होता है। लेकिन आज साहित्यिक संप्रेषण और समकालीन लेखन में हिंग्लिश के प्रभाव का सकारात्मक या नकारात्मक विश्लेषण आवश्यक है। इस शोध में हिंदी भाषा की संरचना में आ रहे बदलावों को उजागर करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान संदर्भ में डिजिटल मीडिया के द्वारा हिंदी भाषा को तकनीकी युग के अनुसार परखते हुए भविष्य में इसकी सीमाओं और संभावनाओं को उजागर किया गया है।

Keywords - डिजिटल मीडिया, हिंग्लिश, जनसंचार माध्यम,इंटरनेट, सोशल मीडिया, साहित्यिक संप्रेषण।

प्रस्तावना:

आज डिजिटल मीडिया का युग सूचना प्रौद्योगिकी का चरम उत्कर्ष है, जिसमें भाषाई क्रांति भी नवीन परिवर्तन की राह में अग्रसर है। ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिसने हिंदी भाषा, साहित्य और उसके संप्रेषण के पारंपरिक स्वरूप में एक अप्रत्याशित बदलाव उत्पन्न किया है। आज हमें दिन-प्रतिदिन हिंदी भाषा और साहित्य में एक नये डिजिटल भाषा और साहित्य के रूप में दिखाई दे रहा है। जिसने हिंदी की व्याकरणिक शुद्धता और देवनागरी लिपि की सीमाओं से परे एक नई भाषा संरचना को जन्म दिया है। जो एक ओर हिंदी की लोकप्रियता को विश्वस्तर पर बहुआयामी दिशा दे रहा है, तो दूसरी ओर हिंदी के मानकीकरण की दिशा में एक प्रश्नचिह्न बनकर खड़ा है। आज जबकि डिजिटल मीडिया के विभिन्न माध्यमों; यथा फेसबुक,ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप. और यूट्यूब ने एक ओर जहाँ सूचनाओं और संवादों के आदान-प्रदान को सरल बनाया है, वहीं दूसरी ओर भाषाई क्रांति को जन्म दिया है, जिससे भाषा का स्वरूप, उसकी शैली और उसके प्रयोग की सीमाएँ प्रभावित हुई हैं। पहले हिंदी केवल पत्र-पत्रिकाओं या साहित्य की भाषा थी, लेकिन आज हिंदी डिजिटल मीडिया के माध्यम से वैश्विक संवाद की भाषा के रूप में उभरी है। इसे एक जोर जहाँ हम हिंदी के एक नये अवसर के रूप में देख सकते हैं, तो दूसरी ओर भविष्य के लिए एक नई चुनौती के रूप में भी यह हमारे सामने उपस्थित है। आज वैश्विक स्तर पर हिंदी अपनी एक नई पहचान बना रही है,यह एक अवसर के रूप में है। जबकि हिंदी भाषा के मानकीकरण और व्याकरणिक शुद्धता की दृष्टि से चुनौती के रूप में भी उभरी है।

इस शोध पत्र के द्वारा इस तथ्य का विश्लेषण किया गया है कि हिंदी भाषा के स्वरूप को डिजिटल मीडिया के माध्यमों ने किस स्तर तक प्रभावित किया है।भविष्य में इसके लिए क्या चुनौतियां या कौन सी संभावनाएँ हो सकती हैं। इसके राह में तकनीकी शब्दावली का सीमित विकास, टाइपिंग और फॉन्ट की समस्याएँ,हिंग्लिश का बढ़ता प्रयोग या व्याकरणिक शुद्धता का अभाव जैसी सीमाएँ परिलक्षित हो रही हैं, जिससे भविष्य की हिंदी की राह आसान नहीं रह गई है। इस शोध पत्र का उदेश्य डिजिटल मीडिया के परिपेक्ष्य में हिंदी के विविध आयामों को परखना और भविष्य की संभावनाओं को तलाशना है। इन्हीं प्रमुख बिंदुओं का इसमें आलोचनात्मक विश्लेषणा किया गया है। हिंग्लिश के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों का भी विश्लेषण किया गया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

शोध अंतराल -

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों के आधार पर हमें यह दृष्टिगोचर होता है कि डिजिटल मीडिया और हिंदी के विषय पर पिछले कुछ वर्षों में पर्याप्त शोध हुए हैं। जिससे हमें इस दिशा में एक नवीन दृष्टिकोण की प्राप्ति हुई है, लेकिन इसके बावजूद कि इन विषयों से संबंधित बहुत से प्रश्न अनुत्तरित हैं, जैसे-डिजिटल हिंदी के प्रयोग के लिए तकनीकी स्तर पर ठोस आंकड़ों का अभाव है। AI आधारित भाषा प्रयोग, लिपि का परिवर्तन, वाक्य-संरचना में परिवर्तन,हिंग्लिश का प्रयोग, अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता का शिक्षा या वास्तविक अनुप्रयोग से जोड़ने का प्रयास न होना । इस रूप में डिजिटल मीडिया की हिंदी के भाषिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक या तकनीकी स्तर पर समग्र विश्लेषण की आवश्यकता बनी हुई है। जिससे हिंदी के भाषिक परिवर्तन और भविष्य के लिए इसकी संभावनाओं को समझने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हो सके।

1.1 डिजिटल हिंदी के व्यवस्थित स्वरूप के निर्धारण का अभाव:- परंपरागत हिंदी देवनागरी लिपि पर आधारित थी, लेकिन वर्तमान परिपेक्ष्य में 'हिंग्लिश' के रूप में 'रोमन हिंदी" का प्रचलन बढ़ा है। लेकिन डिजिटल हिंदी में कोई एकीकृत वर्तनी-मानक नहीं है, जैसे - एक ही शब्द के अनेक रूप (हम गये - Ham gaye, Hum gye) दिखाई देते हैं, जिससे भाषिक अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हुई है।

क्रिया शब्दों को हिंदी क्रिया-प्रत्ययों से जोड़कर नवीन शब्द निर्मित किए जा रहे हैं, जैसे - स्टोरी लगाना, पोस्ट करना, लाइक करना करना आदि । अब इस रूप में वाक्यखंड पहले से अधिक संक्षिप्त हो गए हैं, अपूर्ण वाक्यों का प्रचलन बढ़ा है। यह उपयोगकती या वक्ता के समय-दबाव से उत्पन्न मानसिकता का द्योतक है। वाक्यों के स्थान पर इमोजी और दृश्य संकेत शब्दावली को व्यक्त कर रहे हैं। हैशटैग निर्माण (#HINDI DIWAS) या मीम-आधारित संप्रेषण हिंदी की एक नितांत नवीन अभिव्यक्ति विधा है, जो पारंपरिक भाषा अध्ययन से अलग दृश्य-पाठ के सह-सम्बंध के रूप में दिखाई देता है। सोशल मीडिया की भाषा के रूप में डिजिटल हिंदी हमारे मन-मस्तिष्क पर यह प्रश्न उत्पन्न करती है कि क्या भविष्य में हिंदी का स्वरूप लिखित न होकर क्या केवल श्रव्य - दृश्य के रूप में ही स्थिर हो जाएगी। AI न केवल हिंदी के प्रयोग का एक माध्यम है,बल्कि भविष्य की हिंदी के स्वरूप का निर्धारण भी करता जा रहा है,इसलिए यह आवश्यक है कि बहुआयामी दृष्टिकोण को अपनाकर डिजिटल हिंदी के स्वरूप का अध्ययन किया जाय तथा भविष्य के लिए इसकी संभावनाओं को परखा जाय ।

1.2 देवनागरी लिपि और हिंग्लिश' के रूप में रोमन हिंदी से संबंधित भाषिक परिघटना:- वस्तुतः अभी तक हिंदी की पहचान देवनागरी से ही जानी जाती है, लेकिन डिजिटल हिंदी ने इसे Roman script के साथ जोड़ दिया है। यह अभी तकनीकी सुविधा के लिए एक आदतन व्यवहार की भाषा है या लिपि - चयन के लिए एक सचेत निर्णय की भाषा,इसका स्पष्ट निर्धारण नहीं है। वस्तुतः इसके लिए कोई मानकीकृत वर्तनी प्रणाली नहीं है।। जैसे- 'है' के लिए कोई 'Hai'लिखता है, तो कोई 'hy' तो कोई 'h'। यहाँ हमें वर्तनी विविधता दिखाई देती है, जो या तो विभिन्न आयु वर्ग या टाइपिंग दक्षता के अनुरूप हो या पूर्ण रूप से यादृच्छिक हो। इसमें विस्तृत विश्लेषण की आवश्यकता है। यह प्राय: देखा जाता है कि आज की युवा-पीढी जो अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित है पर डिजिटल हिंदी या रोमन हिंदी का प्रभाव ज्यादा है, और यह एक सामान्य धारणा बन चुकी है कि यह पीढ़ी रोमन हिंदी को प्राथमिकता देती है, जबकि हिंदी माध्यम वाले युवा वर्ग देवनागरी लिपि को प्राथमिकता देते हैं। हमें यह देखना होगा कि इस रोमन हिंदी से देवनागरी हिंदी के अस्तित्व पर कोई संकट है या यह एक सह अस्तित्व का परिचायक है।

1.3 भाषा की शुद्धता और भाषा परिवर्तन के आयाम का अवलोकन - डिजिटल हिंदी के रूप में जहाँ एक ओर भाषा की शुद्धता पर प्रश्नचिह्न उपस्थित हुआ है, वहीं दूसरी ओर भाषा विज्ञान की यह अवधारणा है कि भाषा सामाजिक परिस्थितियों के साथ सतत् परिवर्तनशील है। इस परिवर्तन को हम इस रूप में समझ सकते हैं -

'संदेश भेजना'

या

'संदेश सम्प्रेषण'

अब 'message भेजना'

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

हमें यह दिखाता है कि अंग्रेजी के शब्द सायास ही हिंदी की वाक्य-संरचना में समाहित हो रहे हैं। हमें इसका विश्लेषण मानकीकृत भाषा दृष्टिकोण से नहीं बल्कि वर्णनात्मक भाषा दृष्टिकोण के माध्यम से करना चाहिए। हमें यह देखना होगा कि डिजिटल हिंदी अपने वास्तविक प्रयोग के परिपेक्ष्य में सामाजिक -तकनीकी संदर्भ या परिवर्तनशील प्रवृत्तियों के समक्ष कैसे परिलक्षित हो रही है। एक तरफ हमें यह देखना होगा कि भाषा का सही या मानक रूप क्या होना चाहिए तो दूसरी ओर भाषा जैसी वास्तविक रूप में प्रयुक्त हो रही है, उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन करना होगा। डिजिटल हिंदी का स्वरूप निरंतर परिवर्तनशील है, इसकी भाषा हर दिन अपना स्वरूप बदलती है। आज इसमें जो प्रचलित शब्द हैं, वो कुछ वर्षों के बाद अप्रचलित हो सकते हैं। इससे हम इतना तो समझ सकते हैं कि ऐसी हिंदी का कोई दीर्घकालिक भविष्य नहीं है। इसमें हमें डिजिटल हिंदी के स्वरूप में होने वाले बदलावों का तुलनात्मक अध्ययन समय-समय पर करना होगा। हमें यह देखना होगा कि हिंदी का वास्तविक स्वरूप किन कारणों या किन परिस्थितियों में अपना रूप बदल रही है।

1.4 शोध-अंतराल

1. डिजिटल हिंदी का सीमित अध्ययन क्षेत्र /भाषिक परिवर्तन या तकनीकी परिवर्तन का अध्ययन।
2. हिंदी के परंपरागत स्वरूप और AI आधारित हिंदी का स्वतंत्र अध्ययन/हिंदी के परम्परागत स्वरूप और AI आधारित हिंदी का समेकित अध्ययन।
3. दीर्घकालिक अध्ययन का अभाव/भविष्य की हिंदी के लिए दीर्घकालिक अध्ययन की आवश्यकता।

1.5 शोध प्रश्न:-

4. हिंदी भाषा में प्रयोग की दृष्टि से उसकी भाषा-शैली में पिछले पाँच या दस वर्षों में क्या परिवर्तन हुए हैं?
5. विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न आयुवर्ग के लोगों द्वारा सामाजिक, भाषिक या तकनीकी स्तर पर अप्रत्यक्ष रूप से परिवर्तन की दिशा क्या रही ?
6. भविष्य की हिंदी के लिए शोध अध्ययन की क्या रूपरेखा तय की जाए, जिससे इससे दीर्घकालिक अध्ययन को सहायता मिले?
7. AI भविष्य की हिंदी को किस रूप में प्रभावित कर सकती है?
8. क्या डिजिटल हिंदी को परम्परागत हिंदी से अलग एक स्वतंत्र भाषा के रूप में स्वीकार किया जा सकता है?

1.6 शोध-पत्र का योगदान :-

प्रस्तुत शोध-पत्र में डिजिटल हिंदी के स्वरूप और भविष्य के लिए उसकी संभावनाओं को केवल भाषिक परिवर्तन की सीमारेखा में न रखकर बल्कि इसका संबंध सामाजिक, तकनीकी और सांस्कृतिक परिस्थितियों से जोड़ा गया है। इस रूप में बहुआयामी स्तर पर दीर्घकालिक अध्ययन की पृष्ठभूमि तैयार की गई है। हिंदी के परम्परागत ढ़ाँचे और डिजिटल हिंदी की संरचना को भाषा की लिपि, शब्दावली, वाक्य - संरचना, कोड- मिश्रण, संक्षिप्तता, AI, हैशटैग, इमोजी के स्तर पर परखना और हिंदी के वर्तमान स्वरूप को समझना इस शोधपत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। डिजिटल शिक्षा के लिए हिंदी के प्रयोग की संभावनाओं, डिजिटल लेखन कौशल या कम्प्यूटरीकृत भाषाविज्ञान के अध्ययन में यह शोध-पत्र उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके द्वारा यह अध्ययन किया गया है कि हिंदी डिजिटल रूप में अपनी रचनात्मकता या सामाजिक प्रतिबद्धता को कैसे बचा सकती है या तकनीक परिवर्तन के साथ स्वयं को कितना आत्मसात करती है।

डिजिटल हिंदी के रूप में हिंदी का वर्तमान का स्वरूप:-

वर्तमान समय मैं जहाँ सोशल मीडिया सबसे प्रभावशाली संवाद माध्यम है, लोग विभिन्न सोशल मीडिया माध्यमों फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब जैसे माध्यमों से संवाद सम्प्रेषण कर रहे हैं। डिजिटल हिंदी के रूप में हिंदी वैश्विक मंच पर विराजमान है। भाषाई परिवर्तन का एक नवीन रूप उभरकर हमारे सामने उपस्थित हुआ है। डिजिटल हिंदी ने हिंदी के मूल रूप को स्वरूप, शैली और प्रयोग दृष्टि से गहराई से प्रभावित किया है। जहाँ

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

हिंदी के प्रयोग की संभावनाएँ बढ़ी हैं, वहीं दूसरी और हिंदी की शुद्धता, व्याकरण और मानकीकरण से संबंधित समस्याएं भी उत्पन्न हुई हैं। और आज रोमन हिंदी, देवनागरी हिंदी की तुलना में अधिक प्रचलित हो गई है। ऐसी स्थिति में यह जरूरी है कि तकनीकी प्रगति और भाषिक स्वरूप के बीच संतुलन बनाया जाय और डिजिटल माध्यमों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए तो यह अपने मूल स्वरूप को संरक्षित करते हुए अपने अस्तित्व को बचा सकती है। आज डिजिटल हिंदी एक व्यवसायिक भाषा बन चुकी है। प्रभावशाली और गतिशील भाषा के रूप में निरंतर आगे बढ़ रही है। निरंतर नवाचार, डिजिटल साक्षरता और सामूहिक प्रयास से वैश्विक स्तर पर हिंदी अपने अस्तित्व को बचाते हुए लोकप्रिय भाषा के रूप में अपनी एक नई पहचान बना सकती है।

डिजिटल लेखन में हिंदी का बढ़ता प्रभाव -

इंटरनेट पर हिंदी साहित्य का संसार बहुत व्यापक हो चुका है। आज साहित्यिक हिंदी वेव पन्नों की संख्या करोड़ के ऊपर पहुँच चुकी है। जहाँ कविताकोश में चंदवरदाई से लेकर कविता लिखने का अभ्यास शुरू करनेवाले नवोदित कवि की कविताओं का जखीरा उपलब्ध है, वहीं 'हिंदी समय' जैसी बेवसाईट पर साहित्य की तमाम विधाओं की उत्कृष्ट कृतियों को संपूर्ण रूप से उपलब्ध कराया जा रहा है। ऐसे कई हजार से वेबसाइट और सामूहिक ब्लॉग हैं जो साहित्य रचने में संलग्न युवाओं को प्रोत्साहित कर रहे हैं। आज मुद्रण, प्रकाशन और प्रेषण की बढ़ती लागत से जूझ रही साहित्यिक पत्रिकाओं का एक सुलभ और सशक्त विकल्प हिंदी इंटरनेट ही हो सकता है। आज देश-विदेश में अकादमिक स्तर पर ई-साहित्य पर चर्चा, गोष्ठी, सेमिनार और सम्मेलन आयोजित हो रहे हैं। आज बहुत सी लघु पत्रिकाओं ने भी अपने ब्लॉग, बेवसाइट और फेसबुक पेज बना लिए हैं।

सही मायने में देखा जाय तो इंटरनेट पर हिंदी और हिंदी साहित्य का भविष्य चमकदार है। आज इंटरनेट पर इस वर्ग की अपनी हिंदी भाषा है। आज मोबाइल डिजिटल हिंदी का एक तीव्रतम संचार माध्यम बन चुका है। मेलजोल और बेवदुनिया जैसे हिंदी मेल पोर्टल अपनी जड़ें जमा चुके हैं। विभिन्न निजी क्षेत्र की कम्पनियाँ हिंदी में सॉफ्टवेयर निर्माण में दिलचस्पी ले रहे हैं। देवनागरी लिपि कम्प्यूटर के अनुकूल हो रही है।

अब हिंदी में सॉफ्टवेयर बन रहे हैं। इंटरनेट पोर्टल बन रहे हैं और बेवसाइट का निर्माण किया जा रहा है। सूचना और प्रौद्योगिकी में डिजिटल हिंदी व्यवसायिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नजर आ रही है। बहुराष्ट्रीय सॉफ्टवेयर कंपनी आइबीएम ने भारत के सेंटर फॉर डेवलेपमेंट आफ एडवाड कंम्प्यूटिंग (सी-डैक) के साथ मिलकर हिंदी के लिए स्पीच रिकागनिशन टेक्नोलॉजी विकसित कर ली है इससे कुछ अर्द्धशिक्षित और शारीरिक रूप से अक्षम भी इस तकनीक का उपयोग कर कंम्प्यूटर में अपना सारा कार्य हिंदी में कर सकते हैं। कई बोलियों को समेटते हुए यह अभी 90000 हिंदी शब्दों की पहचान कर सकता है। आज कला, विज्ञान, वाणिज्य हर क्षेत्र में लाखों पारिभाषिक शब्दों के निर्माण से हिंदी का स्वरूप सशक्त हुआ है। वैश्विक भाषा के रूप में इस डिजिटल हिंदी में अपार संभावनाएँ हैं। खासकर आज कम्प्यूटर के लिए हिंदी और देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता उसे विश्वस्तर पर ले जा रही है। आज कंप्यूटर पर विभिन्न भारतीय भाषाओं और हिंदी के के लिए उपयुक्त कुंजीपटल का विकास हो चुका है। आज हिंदी के अनेकों सॉफ्टवेयर बाजार में उपलब्ध हैं। माइक्रोसॉफ्ट जैसे सॉफ्टवेयर ने डिजिटल हिंदी को भारतीयों के लिए आसान कर दिया है। यही कारण है कि अंग्रेजी नहीं जानने वाले भी इंटरनेट के जरिये अपना काम आसानी से कर रहे हैं। हिंदी के बेव पोर्टल विभिन्न जानकारियाँ उपलब्ध कराने में सक्षम हो रहे हैं। आज डिजिटल हिंदी चीनी भाषा के बाद विश्व में लोकप्रियता के पायदान पर दूसरे नम्बर पर है।

डिजिटल रूप में देवनागरी हिंदी का विस्तार :

डिजिटल हिंदी का संचार माध्यमों में तीव्रतम प्रसार हो रहा है और यह यूनिकोड जैसी तकनीक के व्यापक उपयोग से संभव हो पाया है। आज हिंदी-इंग्लिश कोड- मिक्सिंग और स्क्रिप्ट-प्रयोग के बदलते स्वरूप को हम देख सकते हैं। यूनिकोड के कारण पुराने फॉन्ट (जैसे कृतिदेव) की समस्याओं का समाधान मिला। आज इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड, वॉइस टाइपिंग और गूगल इनपुट टूल्स, Gboard ने मोबाईल फोन पर देवनागरी हिंदी को लिखना सरल बना दिया

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

है। सोशल मीडिया, OTT, हिंदी विकीपीडिया, समाचार पोर्टल, यूट्यूब, ब्लॉग आदि पर डिजिटल हिंदी अपने क्षेत्र का दिन-प्रतिदिन विस्तार कर रही है। कुछ चुनौतियाँ भी हमें इस पहल में देखने को मिल रही हैं, जो हिंदी के मूल रूप के लिए चिंता उत्पन्न करती है, जैसे हिंग्लिश' का बढ़ता प्रचलन, मानकीकृत वर्तनी की कमी, पारिभाषिक तकनीकी शब्दावरी की कमी या गुणवत्तापूर्ण डिजिटल हिंदी सामाग्री का अभाव। हिंदी चैटबॉट, स्पीच-टू-टेक्स्ट, टेक्स्ट-टू-स्पीच या मशीन अनुवाद डिजिटल हिंदी को आधार प्रदान कर रहे हैं, लेकिन भविष्य के लिए एक सुदृढ आधारभूमि का अभाव परिलक्षित होता है। जो भी हो पिछले दो-तीन दशकों में देवनागरी हिंदी का डिजिटल विस्तार तेजी से हुआ है, जिससे हिंदी इंटरनेट पर सबसे तेज़ बढ़ती भाषाओं में गिनी जाने लगी है।

हिंदी अंग्रेजी कोड मिक्सिंग द्वारा हिंग्लिश का बढ़ता प्रचलन:-

आज डिजिटल हिंदी के रूप में हिंग्लिश का प्रचलन सामान्य हो चला है। देवनागरी हिंदी में अंग्रेजी शब्दों का बहुतायत प्रयोग अब सामान्य हो गया है।

उदाहरण स्वरूप:

"आज मौसम Cool cool है।"

"मेरा काम complete हो गया ।"

" सुबह से busy हूँ।"

या फिर हम इस रूप में भी हिंदी को देख सकते हैं:

"Tum kal kahan gaye the?"

"kal mai school jaungi."

यहाँ हिंदी वाक्य-संरचना में अंग्रेजी के शब्द प्रयोग किये गए हैं। हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाएँ एक ही वाक्य में सक्रिय रूप से प्रयुक्त हुई हैं। जिसके कारण हिंदी की शब्दावली भी प्रभावित हुई है। तकनीक और इंटरनेट संबंधित विभिन्न अंग्रेजी शब्द डिजिटल हिंदी के प्रयोग का एक हिस्सा बन चुके हैं। आज वायरल होना, पोस्ट करना, शेयर करना, लाइक करना, अपलोड करना, कमेंट करना, मैसेज करना, फॉलो करना जैसे डिजिटल हिंदी का हिस्सा बन चुके हैं। हमें यहाँ यह देखना होगा कि अंग्रेजी के शब्द हिंदी के व्याकरणिक ढाँचे में किस प्रकार समाहित हो रहे हैं।

डिजिटल हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का अंतर्संबंध:-

डिजिटल हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी का मिश्रण सामान्य है, जैसे - "अभी class बा, बाद में" बात करती हूँ।"

यहाँ प्रस्तुत हिंदी, भोजपुरी और अंग्रेजी का मिश्रित प्रयोग डिजिटल हिंदी की बहुभाषिक प्रकृति को दर्शाती है। विभिन्न सोशल मीडिया माध्यमों फेसबुक, टविटर, यू ट्यूब, इंस्टाग्राम आदि पर डिजिटल हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में बनने वाली सामग्री एक व्यापक दर्शक- वर्ग तक पहुँच रही है। ये क्षेत्रीय भाषाएँ डिजिटल हिंदी के संसार को स्थानीय सांस्कृतिक से आधार प्रदान करती हैं। लोकगीत, कहानियाँ, कहावतें, लोक साहित्य को डिजिटल हिंदी के साथ जोड़ते हुए इसके भविष्य को संरक्षित किया जा सकता है। इस रूप में डिजिटल हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का संबंध पारस्परिक समृद्धि का सम्बंध माना जा सकता है। इन्हें ये एक दूसरे के लिए परस्पर पूरक भाषा के रूप में समझा जा सकता है। यूनिकोड, वॉइस टाइपिंग और विभिन्न ट्रांस्टलेट टूल्स ने दोनों के लिए डिजिटल संसार का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। एक ही कीबोर्ड और फॉन्ट इकोसिस्टम भोजपुरी, राजस्थानी, मैथिली, हिंदी, अंग्रेजी को एक ही वाक्य में मिला देते हैं। विभिन्न संचार माध्यमों में हिंदी सामग्री क्षेत्रीय भाषाओं में डब या सबटाइटल होती है और इस रूप में क्षेत्रीय कंटेंट हिंदी श्रोताओं या दर्शकों तक पहुँचती है। भारत सरकार का भाषिनी मंच हिंदी,अंग्रेजी या क्षेत्रीय भाषाओं के बीच सेतु का कार्य कर रही है, लेकिन इन क्षेत्रीय भाषाओं के लिए भी ओपन डेटासेट, वॉइस टूल और विकिपीडिया जैसे मंच का विकास करना आवश्यक है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

डिजिटल हिंदी और भाषा-प्रौद्योगिकी:-

वर्तमान समय में भाषा प्रौद्योगिकी ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर डिजिटल भाषा बना दिया है। भाषा प्रोधोगिकी का आशय उन AI आधारित तकनीकों से है, जिसके द्वारा भाषा को लिखने, पढ़ने, समझने, अनुवाद करने या बातचीत करने की सुविधा मिली है। इसके मुख्य क्षेत्र निम्नलिखित हैं:

9. यूनिकोड - यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी लिपियों के अक्षर, अंक या चिह्न को अद्वितीय कोड नंबर देनेवाला मानक है। इसने हिंदी को डिजिटल रूप में सशक्त बनाया और हर डिवाइस और प्लेटफॉर्म पर हिंदी को पढ़ने-लिखने लायक बनाया। आज वेबसाइट, ईमेल, सोशल मीडिया, डोमेन नाम, सर्च इंजन और मोबाइल ऐप में हिंदी का सीधा प्रयोग इसी की देन है। यद्यपि इसके प्रयोग में कुछ बाधाएँ भी हैं, जैसे पुराने फॉन्ट(चाणक्य, कृतिदेव) और यूनिकोड के बीच रूपांतरण की आवश्यकता होती है।
10. NLP और मशीन अनुवाद -: NLP के द्वारा मशीन अनुवाद के माध्यम से एक भाषा का अंश अपने-आप दूसरी भाषा में बदल जाता है। भारत सरकार की 'भाषिनी' योजना तथा आईआईटी एवं सी-डैक जैसी संस्थाएँ इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके द्वारा भाषा की पहचान, शब्द- विभाजन, भाव - विश्लेषण, प्रश्नोतर, सूचना निष्कर्षण, व्याकरण संबंधी सहायता या मशीनी अनुवाद का कार्य सरल हुआ है। यद्यपि इसके राह में भी कई चुनौतियाँ हैं, जैसे- भाषिक विविधता, रोमन हिंदी, कोड-मिक्सिंग, संदर्भानुसार अर्थ परिवर्तन, विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों का प्रतिनिधित्व या प्रशिक्षण डेटा।

भविष्य के लिए संभावनाएँ :-

11. शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल हिंदी को बढ़ावा दिया जा सकता है। जिसमें डिजिटल पाठ्यपुस्तक, ऑनलाइन कक्षाएं,भाषा-प्रौद्योगिकी में शिक्षण अधिगम, डिजिटल हिंदी को समावेशी शिक्षा के सहायक साधन के रूप में अपना सकते हैं।
12. "हिंदी बोलियों के लिए एक मानकीकृत डिजिटल-जीवंतता सूचकांक का विकास अपेक्षित है, जो सामग्री-मात्रा, उपकरण - समर्थन, अंतःपीढीगत प्रयोग एवं नये क्षेत्रों में उपस्थिति; इन सभी को समाहित करे । द्वितीय, सामाजिक माध्यमों पर उपलब्ध रोमन लिपि हिंदी का संगणकीय विश्लेषण एक विस्तृत एवं अल्प-अन्वेषित क्षेत्र है, जो समकालीन भाषिक परिवर्तन को समझने की दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान है। तृतीय, बोली-वक्ता समुदायों के बीच भाषिक अभिवृति का अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि संरक्षण - नीति की सफलता अंततः समुदाय की स्वयं की अभिवृत्ति पर निर्भर करती है। चतुर्थ, विरासती फ़ॉन्ट-सामग्री के रूपांतरण हेतु स्वचालित मानचित्रण-पद्धतियों का विकास एक व्यावहारिक एवं तत्कालिक उपयोगिता वाला अनुसंधान क्षेत्र है।" [1] [2] [3]
13. "आगत वर्षों में लगभग सभी कम्प्यूटरों में हिन्दी समर्थन पूरी तरह अन्तर्निर्मित होगा। प्रकाशन उद्योग द्वारा अत्यधिक उपयोग किये जाने वाले ग्राफिक्स तथा डीटीपी पैकेजों, फोटोशॉप, कोरलड्रॉ तथा इनडिजाइन आदि में हिन्दी यूनिकोड समर्थन आने से भविष्य में प्रकाशन उद्योग भी यूनिकोड को अपनायेगा। यूनिकोड के प्रति बढ़ती जागरूकता और प्रकाशन के सॉफ्टवेयर पैकेजों के यूनिकोड मित्र संस्करण आने के मद्देनजर इस दशक के अन्त तक कम्प्यूटर और इंटरनेट पर सारा कार्य यूनिकोड हिंदी में होने लगेगा।" [4]
14. "हिंदी संगणन सम्बन्धी सॉफ्टवेयर औजारों की बात करें तो हिंदी टंकण, मशीनी लिप्यन्तरण, मशीनी अनुवाद, शब्दकोष, वर्तनी जाँच, पाठ से वाक् तथा फॉण्ट परिवर्तक- आदि तंत्र लगभग पूरी तरह सुलभ हो चुके हैं। ओसीआर तथा श्रुतलेखन (वाक् से पाठ) के क्षेत्र में और विकास की आवश्यकता है। ये हिंदी सामग्री के डिजिटली - करण हेतु दो महत्वपूर्ण सॉफ्टवेयर हैं। विभिन्न प्रोग्रामिंग भाषाएँ और डाटाबेस भी हिंदी समर्थन से युक्त है। । मेक ओऐस को छोड़कर अधिकतर ऑपरेटिंग सिस्टमों का हिंदीकरण हो चुका है। मोबाईल प्लेटफॉर्मों तथा उपकरणों पर हिंदी सुलभ होती जा रही है। कुल मिलाकर शोध के स्रोत के रूप में डिजिटल मीडिया का अब तक का विकास संतोषपूर्ण है. तथा भविष्य सही दिशा में है।" [5]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

15. डिजिटल हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ भी बढ़ेंगी। आज सोशल मीडिया के युग में कंटेंट राइटिंग और कॉपी राइटिंग की माँग बढ़ी है। डिजिटल पत्रकारिता का भी मार्ग प्रशस्त हुआ है। अनुवाद, के क्षेत्र में भी संभावनाएं बढ़ी हैं। सॉफ्टवेयर, ऐप, ई-कॉमर्स और सरकारी दस्तावेज़ों का हिंदी में अनुवाद तेजी से हो रहा है। AI अनुवाद के बाद उसके सुधार के लिए पोस्ट एडिटर की आवश्यकता है। डिजिटल मार्केटिंग, ई-कटेंट डेवलपर, डेटा एनोटेशन, भाषा- विशेषज्ञ, ऑनलाइन ट्यूटर, वॉइस असिस्टेंट के लिए स्क्रिप्ट लेखक, प्रॉम्प्ट राइटर के रूप में भविष्य में अपार संभावनाएँ हैं।

4.समन्वित निष्कर्ष - भविष्य में डिजिटल हिंदी के रूप में इसमें अपार संभावनाएँ हैं। संचार माध्यमों के साथ AI आधारित मशीन लर्निंग, स्वचालित अनुवाद, हिंदी टंकण, फॉण्ट परिवर्तन, टेक्स्ट-टू-स्पीच तथा स्पीच-टू-टेक्स्ट जैसी तकनीकों के विकास से डिजिटल हिंदी की आधारभूमि और भी विस्तृत हो सकती है। यूँ तो डिजिटल हिंदी के मार्ग में कुछ चुनौतियाँ भी हैं - जैसे-तकनीकी या पारिभाषिक शब्दावली का अभाव, गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री का अभाव, भाषागत अशुद्धियां, रोमन लिपि का बढ़ता प्रभाव, विभिन्न बोलियों के लिए अनुवाद या ध्वनि लिप्यन्तरण के लिए पर्याप्त संसाधनों का अभाव या कृत्रिम बुद्धिमता द्वरा हिंदी की भाषायी विविधता की सुनिश्चित पहचान । इन्हें दूर करने के लिए भाषा विशेषज्ञों, तकनीकी विशेषज्ञों, सरकार, शिक्षण संस्थानों तथा हिंदी भाषा प्रेमियों को साथ मिलकर सार्थक पहल करना होगा, जैसे- भाषा-तकनीक का विकास, डिजिटल हिंदी का एक सुनिश्चित रूप, इसमें मौलिक और विश्वसनीय सामग्री का निर्माण। साथ ही डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देते हुए डिजिटल हिंदी को एक ठोस आधार देना आदि।

अंततः हम कह सकते हैं कि डिजिटल हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है, इसमें अपार संभावनाएँ हैं। जरूरत है तो एक सार्थक प्रयास और सतत् जागरूकता की। यदि तकनीकी नवाचार को शिक्षा में शामिल किया जाय, तकनीकी विशेषज्ञ, भाषा-विशेषज्ञ जागरूक रहें, गुणवत्तापूर्ण भाषा - संसाधन का विकास किया जाए, तो निस्संदेह डिजिटल हिंदी वैश्विक भाषा के रूप में अपनी एक नई पहचान बना सकती है। डिजिटल हिंदी को एक ओर जहाँ तकनीक के साथ कदम -से-कदम मिलाकर चलना होगा, तो दूसरी और भो अपने मूल रूप के अस्तित्व को भी बचाना होगा, अपनी शुद्धता और सहजता को भी अक्षुण्ण रखने का प्रयास करना होगा। तभी डिजिटल हिंदी के रूप में हिंदी का मूल स्वरूप भी सुरक्षित रहेगा और वैश्विक डिजिटल मंच पर भी अपनी सशक्त पहचान बना सकेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डैश, एन० एस० (2005) कॉपर्स लिंग्विस्टिक्स एंड लैंग्वेज टेक्नोलॉजी : विद रेफरेंस टू इंडियन लैंग्वेजेज ।
नई दिल्ली : मित्तल पब्लिकेशन्स

2. लैंग्वेज शिफ्ट; फिशमैन, जे० ए० (1991), रिवर्सिंग लैंग्वेज शिफ्ट ;थ्योरेटिकल एंड एम्पीरियल फाउंडेशन्स ऑफ ऑफ असिस्टेंट टू थ्रेटन्ड लैंग्वेजेज, क्लीवेडन; मल्टीलिंगुअल मैटर्स ।

3.नेटल, डी० और रोमेन; एस० (2000), वैनेशिंग वायसेस : द एक्सटिंक्शन ऑफ द वर्ल्डस् लैंग्वेजेज़। ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

4.भूमंडलीकरण:-

भूमंडलीकृत हिंदी का डिजिटल मीडिया में विस्तार: शोध का विशिष्ट उपकरण, JETIR,2204838, page no.- 1336,1337, रितु कुमारी,शोधार्थी (पीएफडी०), अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय,अलीगढ़।

5.भूमंडलीकृत हिंदी का डिजिटल मीडिया में विस्तार : शोध का विशिष्ट उपकरण | JETIR 2204838, Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR) पेज न०- 1336,1337

6.भूमंडलीकृत हिंदी का डिजिटल मीडिया में विस्तार : शोध का विशिष्ट उपकरण | JETIR 2204838, Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR) पेज न०- 1336,1337

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

7.भाषा और प्रौद्योगिकी - विनोद कुमार प्रसाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली - 1999
8.जनसंचार, राधेश्याम शर्मा, हरियाणा साहित्य, अकादमी, पंचकूला, चण्डीगढ़, 1999
8.गूगल, चैट जीपीटी।